वृहस्पतविार व्रत की आरती

जय जय आरती राम तुम्हारी। राम दयालु भक्त हतिकारी॥
जनहति प्रगटे हरि व्रतधारी। जन प्रहलाद प्रतज्ञि पारी॥
द्रुपदसुता को चीर बढ़ायो। गज के काज पयादे धायो॥
दस सरि छेदि बीस भुज तोरे। तैंतीसकोटि देव बंदी छोरे॥
छत्र लएि सर लक्ष्मण भ्राता। आरती करत कौशल्या माता॥
शुक शारद नारदमुनि ध्यावैं। भरत शत्रुघन चँवर ढुरावैं॥
राम के चरण गहे महावीरा। ध्रुव प्रहलाद बालसिुर वीरा॥
लंका जीति अवध हरि आए। सब संतन मलि मिंगल गाए॥
सीय सहति सहिासन बैठे। रामा। सभी भक्तजन करें प्रणामा॥